ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 26-27

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

वर्तमान परिपेक्ष्य में दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक चुनौतियों का अध्ययन

1. वीरेन्द्र कुमार पाण्डेय 2. मुरलीधर सिंह

1. शोध अध्येता 2. सहायक आचार्य (शिक्षा संकाय),
ज0रा0वि0वि0, चित्रकूट (उ0प्र0), भारत

Received- 15.08.2020, Revised- 21.08.2020, Accepted - 25.08.2020 E-mail: - vast.durgesh2010@gmail.com

सारांश : ***भारत एक विशाल राष्ट्र है जिसकी कुल आवादी लगभग 121 करोड़ है जिसमें लगभग 2.68 करोड़ विकलांग हैं जो सम्पूर्ण जनसंख्या का 3: है जो कि एक बड़े समाज का प्रतिनिधित्व करती है जिसके विकास के बिना सम्पूर्ण राष्ट्र के विकास की कल्पना अधूरी है किसी भी राष्ट्र का विकास उसके नागरिकों के विकास पर निहित रहता है। अतः उपरोक्त शोध परिणामों का उपयोग करके विकलांग विद्यार्थियों के उचित शैक्षिणिक व्यवस्था करके विकलांग विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा में शैक्षिक दर बढ़ाया जा सकता है जिससे विकलांगों का आर्थिक व सामाजिक विकास होगा तदानुसार राष्ट्र का विकास होगा।***

कुंजीभूत शब्द– विशाल, प्रतिनिधित्व, सम्पूर्ण राष्ट्र, कल्पना,नागरिकों, परिणामों, विकलांग विद्यार्थियों, शैक्षिणिक।

Literacy status of disabled population in India

Literate	Illiterate	Total disabled	% Literates to total disabled	Literacy rate population
14618353	12196641	26814994	54.52	74.04

Literacy status of disabled population in UP

Literate	Illiterate	Total disabled	% Literates to total disabled	Literacy rate population
2166693	1990821	4157514	52.12	69.72

अध्ययन की आवश्यकता– अस्थिविकलांग तथा दृष्टिबाधित को अपनी विकलांगता के बावजूद जीवन में अपने शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक विकास के सम्भाविक उच्चतम विन्दु तक पहुचने तथा स्थिति को बनाये रखने के लिए सामान्य से भिन्न परन्तु उनके लिए उपयुक्त शिक्षण प्रशिक्षण तकनीकों का प्रयोग किया जाता है इसके लिए शैक्षिक सुविधाओं की उपलब्धता की स्थिति आवश्यक होती है इस विषय के अध्ययन की आवश्यकता है कि वर्तमान स्थिति में अस्थिविकलांग तथा दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध शैक्षिक सेवाओं की क्या स्थिति है यह एक विचारणीय बिन्दु है। अतः शोधकर्ता ने दिव्यांगजनों की वर्तमान में उनकी शैक्षिक स्थिति से अवगत होने हेतु उपरोक्त शीर्षक का चयन किया।

समस्या कथन– "वर्तमान परिपेक्ष्य में दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक चुनौतियों का अध्ययन"।

अध्ययन के उद्देष्य –

उच्च शैक्षिक स्तर पर दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति का अध्ययन करना।

परिकल्पना– उच्च शैक्षिक स्तर पर दिव्यांग अस्थि विकलांग तथा दृष्टिबाधित विकलांगों को लेखन सम्बन्धित की समस्याओं में सार्थक अन्तर है।

विधियाँ और प्रक्रियाएं– आँकड़ों का स्रोत अस्थिविकलांग जिनकी विकलांगता 50 प्रतिशत से लेकर 100 प्रतिशत तक हो तथा दृष्टिबाधित 50 प्रतिशत से लेकर 100 प्रतिशत विद्यार्थियों को अध्ययन हेतु सीमित है।

व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित प्रश्नावली का प्रयोग उपकरण के रूप में किया गया है। आँकड़ों को प्रतिशत के द्वारा एवं (X2) के द्वारा विश्लेषण और आख्या वर्णनात्मक ढंग से की गयी है।

प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या– इस षोध का उद्देश्य उच्च शिक्षा में अस्थि विकलांग तथा दृष्टिबाधित विकलांग को आने वाली समस्याओं को जानना था। शोधकर्ता ने पूर्व में निर्धारित किये गये उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं के अनुसार परीक्षणों में प्राप्त आंकड़ों का क्रमवार विश्लेषण किया है, जो इस प्रकार है–

सारणी संख्या–1 कुल विद्यार्थियों की संख्या

कक्षा	अस्थि विकलांग	दृष्टिबाधित	कुल योग
बी0ए0	40	35	75
एम0ए0	15	25	40
बी0एड0	35	25	60
एम0एड0	10	15	25
कुल योग	100	100	200

4.2.1 शैक्षणिक समस्याओं से सम्बन्धित

परिकल्पना–1 लेखन सम्बन्धित समस्या उच्च शिक्षा में अस्थि विकलांग तथा दृष्टिबाधित विकलांगों को लेखन सम्बन्धित की समस्याओं में सार्थक अन्तर है।

षून्य परिकल्पना– उच्च शिक्षा में अस्थि विकलांग तथा दृष्टिबाधित विकलांगों को लेखन सम्बन्धित की समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं है।

Ho : Fo = Fe

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

काई वर्ग की गणना

[illegible]	[illegible]			[illegible]
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	
fo	120	75	5	200
fe	67	67	66	200
Fo-fe	53	8	61	
$(fo-fe)^2$	2809	64	3721	
$\frac{(fo-fe)^2}{fe}$	41.93	0.95	56.34	$\chi^2=\sum\frac{(f_o-f_e)^2}{f_e}$ =99.22

व्याख्या—तालिका संख्या 1.4 का अध्ययन करने पर परिगणित X2 का मान 99.22 है। कत्रि 2 के .01 स्तर पर सार्थकता न्यूनतम आवश्यक सारणी मान 9.210 से अधिक है। अतः X2 सार्थक है और शून्य परिकल्पना को निरस्त करते हुए कहा जा सकते है कि छात्रों द्वारा व्यक्ति प्रतिक्रियायें विभिन्न वर्गों में समान रूप से वितरित नहीं है।

निष्कर्षतः यह स्पष्ट है कि दृष्टिबाधित विकलांग एवं अस्थि विकलांगों लेखन सम्बन्धी समस्याओं में भिन्नता है।

प्रमुख निष्कर्ष— शारीरिक तौर से विकलांग विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा ग्रहण करने में निम्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जैसे— शैक्षणिक समस्यायें, सामाजिक समस्यायें, परिवारिक समस्यायें, आर्थिक समस्यायें एवं प्रशासनिक समस्यायें आदि। फिर भी स्पष्ट है कि छात्रों द्वारा व्यक्ति प्रक्रिया के आधार पर उनके विचारों को सम्यक् रूपेण सकारात्मक कह देने से शोध कर्ता को यह दिशा प्राप्त नहीं होती जो उसे अभिशिप्त है। अतः विकलांग विद्यार्थी को उच्च शिक्षा में होने वाली समस्याओं के प्रति विद्यार्थियों के विचारों को निम्नोक्त तथ्य आये जो कि निष्कर्षात्मक रूप में प्रस्तावित किये जा सकते हैं।

शैक्षणिक समस्याओं लेखन सम्बन्धित—

1. विकलांग विद्यार्थियों को लेखन कार्य करने के सम्बन्ध में समीक्षा— कुल विद्यार्थियों में 55 प्रतिशत विद्यार्थी उच्च शिक्षा में लेखन सम्बन्धित कठिनाई को महसूस करते हैं और 43 प्रतिशत विद्यार्थी इस कठिनाई को महसूस नहीं करते हैं जबकि 2 प्रतिशत विद्यार्थी कथन के प्रति अनिश्चितता व्यक्त करते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. एस0पी0 गुप्ता एवं अल्का गुप्ता (2002)— उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भण्डार, इलाहाबाद।
2. राय, पारसनाथ (2006)— अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, पब्लिकेशन, आगरा।
3. गुप्ता, एस0पी0 (2005)— सांख्यिकी विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
4. कपिल एच0के0 (2006)— अनुसंधान विधियाँ, एच0पी0 भार्गव, बुक हाउस, आगरा।
5. अरूण कुमार सिंह (2017)— मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ— मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

*****